International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197
Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 6; November 2017; Page No. 1233-1235

देबारी समझौता व इसका राजस्थान की राजनीति पर पड़ने वाले प्रभाव

सपना यादव
Lecture in History, Government Girls Senior Secondary School, Chavni, Nimkathana Sikar, Rajasthan, India

प्रस्तावना

1526 ई॰ में पानीपत युद्ध में बाबर ने दिल्ली सुल्तान इब्राहिम लोदी को परास्त कर भारत में मुगल साम्राज्य की नींव रखी।[1] जिसे अकबर ने अपनी सूझबूझ व वीरता से विस्तृत, संगठित व दृढ़ कर विस्तृत आधार प्रदान किया। उसने सभी नागरिकों को योग्यता के आधार पर राज्य सेवा में शामिल कर इसे एक राष्ट्रीय राज्य बनाने की कोशिश की। उसने राजपूतों को अपनी मनसबदारी व्यवस्था में शामिल किया तथा वैवाहिक सम्बंध स्थापित करके उन्हें साम्राज्य के आधार स्तम्भ बना दिया। औरंगजेब के समय तक मुगल साम्राज्य अपने चरम पर पहुँच गया लेकिन इसके बाद इसमे पराभव के चिन्ह नजर आने लगे। और औरंगजेब के उत्तराधिकारियों के समय यह पूर्ण रूपेण जर्जर हो गया। इससे उत्पन्न शक्ति शून्यता को मराठों ने भरा।

3 मार्च 1707 ई॰ औरंगजेब की अहमदनगर में मृत्यु हो गई।[2] इसके बाद उसके कमजोर उत्तराधिकारियों का दौर शुरू होता हैं जिसमें केन्द्रीय सत्ता पतनोन्मुख हो गई। शक्तिशाली केन्द्रीय नियंत्रण के अभाव में क्षेत्रीय शक्तियां सिर उठाने लगी व इनमें आपसी संघर्ष व धमाचोकड़ी शुरू हो गइ। जिससे अराजकता की स्थिति पैदा हो गइ। अतः अब तक जो व्यक्तिगत महत्वकांक्षाएं व रियासतों की आपसी प्रतिस्पर्धाएं रूकी हुई थी वे अब निर्बाध रूप से फूट पड़ी। जदुनाथ सरकार के अनुसार समस्त राजस्थान एक ऐसा अजायबघर बन गया, जिसके पिंजडों के फाटक और रक्षक ही हटा दिये गये हो।

इन्हीं परिस्थितियों में मुगल सत्ता से अपने पैतृक राज्य प्राप्त करने के लिए संगठित संघर्ष करने हेतु मेंवाड़, मारवाड़ और जयपुर के राजाओं के बीच देबारी में समझौता हुआ तथा वैवाहिक संम्बन्ध हुए। इस समझौते से राजपूती गठबंधन, राजस्थान में मुगल सत्ता का पराभव, वैवाहिक सम्बन्धों का नया दौर, विवाह सम्बन्धों से भविष्य में होने वाले गृह युद्ध व अराजकता, मराठों का राजस्थान में प्रवेश व लूट–लसोट, मराठा आतंक से त्रस्त राजपूत शासकों का अंग्रजों से सहायक सन्धि करने के दौर की शुरूआत का इस लेख में हम अध्ययन करेंगे।

मुगल उत्तराधिकार संघर्ष व राजस्थानी शासक

औरंगजेब की मृत्यु के बाद उसके पुत्रों मुअज्जम, आजम और कामबक्श के बीच राजगद्दी प्राप्ति हेतु उत्तराधिकार का संघर्ष शुरू हुआ। इस संघर्ष में सबसे महत्वपूर्ण युद्ध जाजऊ का हुआ जो 8 जून 1707 ई॰ में मुअज्जम और आजम के बीच लड़ा गया। जिसमें आजम को परास्त कर मुअज्जम बहादुर शाह के नाम से शासक बना। इस युद्ध में बुंदी का बुद्धसिंह तथा आमेर का विजयसिंह मुअज्जम का पक्ष लिया तथा कोटा का रामसिंह व आमेर के सवाई जयसिंह ने आजम का साथ दिया। आमेर का सवाई जयसिंह युद्ध के अंतिम क्षणों में मुअज्जम के खेमे में चला गया। लेंकिन मुअज्जम जो अब बादशाह बहादुर शाह बन गया था,सवाई जयसिंह से प्रसन्न नहीं था क्योंकि उसने प्रारम्भ में आजम का पक्ष लिया था। अतः अब बहादूर शाह ने उसे दण्ड देने का निश्चय किया इसी प्रकार अजीत सिंह (जोधपुर) भी मुअज्जम का पक्षधर नहीं था।

युद्ध के बाद राजस्थान की स्थिति में आये परिवर्तन तथा देबारी का समझौता

बहादुर शाह जयसिंह व अजीत सिंह को दण्ड देने के उद्देश्य से राजस्थान की ओर प्रस्थान किया। पहले ये आमेर पहुँचा और विजय सिंह को आमेर का शासक घोषित कर पुरस्कृत किया। इस परिवर्तन से सवाई जयसिंह मात्र मुगल मनसबदार की स्थिति में रह गया। आमेर का नाम इस्लामाबाद रखा व उसका फौजदार सैयद हुसैन खाँ को बनाया।[3]

अजीत सिंह मुअज्जम का पक्षधर न होने के कारण बादशाह का कोप भाजन बना तथा उसने नये बादशाह के प्रति अपनी स्वामी भक्ति प्रदर्शित करने हेतु अपना वकील भी दरबार में नही भेजा। अतः बादशाह नाराज होकर सेना सहित जोधपुर पहुँचे और जोधपुर अधिकार कर उसे खालसा घोषित किया तथा उसका नाम मुहम्मदाबाद कर दिया।[4] इस प्रकार के फेरबदल के बाद बादशाह ने दक्षिण की ओर कामबक्श के विद्रोह को दबाने हेतु प्रस्थान किया।

इन फेरबदल की परिस्थितियों मे सवाई जयसिंह व जोधपुर का अजीत सिंह बादशाह से अपने राज्य वापस लेने हेतु दक्षिण जाते वक्त 15 फरवरी 1708 को मेड़ता में मिले तथा उनके साथ मण्डलेश्वर (इन्दौर राज्य) तक गये। लेकिन बहादुर शाह ने तब ही 20 अप्रैल 1708 ई को विजयसिंह के नाम फरमान जारी कर दिया। अतः वहां से लौटकर दोनो महाराणा अमरसिंह द्वितीय के पास सहायता हेतु उदयपुर गये।[5]

देबारी समझौता 1708 ई॰

उदयपुर पहुँचकर देबारी में मारवाड़ के अजीत सिंह, आमेर के सवाई जयसिंह तथा मेवाड़ के महाराणा अमर सिंह द्वितीय के बीच समझौता हुआ जिसकी शर्ते थी–

1. अजीत सिंह को मारवाड़ में पदस्थापित किया जायेगा।
2. सवाई जयसिंह को आमेर का राज्य दिलाया जायेगा।
3. महाराणा अमर सिंह की पुत्री चन्द्र कुँवरी का विवाह सवाई जयसिंह से करने तथा इस विवाह से उत्पन्न पुत्र को सवाई जयसिंह का उत्तराधिकारी घोषित करने पर सहमति हुई
4. अजीत सिंह ने अपनी पुत्री सूरज कुँवरी का विवाह सवाई जय सिंह से किया

समझौते के परिणाम

अजीत सिंह व सवाई जय सिंह का अपने राज्यों पर अधिकार

समझौते के अनुसार तीनों राज्यों की सेनाएं पहले जोधपुर पहुंची जिस पर अजीत सिंह का अधिकार जुलाई 1708 को स्थापित किया। यहां से जब सेनाएं आमेर की ओर चली तो पाया कि कछवाहा सरदारों ने अपने प्रयत्नों से मुगल फौजदार और विजयसिंह को परास्त कर जय सिंह के नाम की दुहाई घोषित कर दी। बाद मे जयसिंह की सेवाएं प्राप्त करने के लिए सम्राट ने 11 जून 1710 ई. को उसके पद को स्वीकार किया और उसे शाही खिलअत से सम्मानित किया।

वैवाहिक सम्बन्धों से उत्पन्न जटिलताएं

देबारी समझौते से उदयपुर के महाराणा ने अपनी पुत्री का विवाह आमेर के सवाई जयसिंह से किया। उदयपुर राजपरिवार ने कई वर्षो से उन राजपरिवारों के साथ विवाह सम्बन्ध करना बंद कर दिया था जिन्होंने अपनी कन्याओं का विवाह मुगल बादशाहों से किया था। 1708 ई. की इस संधि में जयपुर और मारवाड़ के राजाओं द्वारा उदयपुर राजपरिवार के साथ विवाह सम्बन्ध करने की प्रतिष्ठा को पुनः स्वीकृति प्रदान करने वाली शर्त विशेष तौर पर जोडी गई थी। इस बिन्दु पर राणा इस शर्त सहमत हुआ कि उनके यहां उदयपुर राजपरिवार की कन्याओं से उत्पन्न पुत्र पिता की मृत्यु के बाद राज्य के उत्तराधिकारी होंगे। इस प्रकार एक ऐसा सिद्धान्त स्वीकार कर लिया जिसमें गृह कलह के बीज विद्यमान थे। सवाई जयसिंह ने मेवाड़ से विवाह सम्बन्ध स्थापित कर अपना पक्ष तो प्रबल कर लिया और उसे अपने पैतृक राज्य को पुनः प्राप्त करने में सहायता मिली थी लेकिन इस विवाह की शर्त चन्द्र कुँवरी से उत्पन्न पुत्र का उत्तराधिकारी होना, मानकर गृह कलह के बीज बो दिये। भविष्य में गद्दी के लिए हुए इन संघर्षो से राजपूताने पर मराठों का प्रभाव बढ़ता गया।[6] इस संधि के कारण राजपूताने मेंआन्तरिक फूट उत्पन्न हुई जिसके कारण राजस्थान के राजनैतिक रंगमंच पर एक मध्यस्थ 'मराठा' का पदार्पण हुआ। जो मुसलमानों से भी बद्तर था।[7]`

राजस्थान में मुगल सत्ता का पराभव

देबारी समझौते में तीनों राजपूत राज्य मेवाड़, मारवाड़, आमेर संगठित होकर सैनिक शक्ति के बल पर आमेर व जोधपुर से मुगल सत्ता को उखाड़ फेंका। इस पर मुगल बादशाह ने सैयद हुसैन खां को पुनः आमेर पर अधिकार करने हेतु भेजा।जब यह सूचना राजपूतों को मिली तो उन्होंने उसका मार्ग रोकने के लिए सांभर नगर पर कब्जा कर लिया। सैयद हुसैन खां को सांभर के निकट मुकाबला करना पड़ा। 16 अक्टूबर 1708 ई. सैयद हुसैन खां मथुरा व नारनौल के फौजदार व अन्य अधिकारी 3000 मुगल सैनिकों के साथ खेत रहे। इस विजय से राजपूतो के हौंसले और बढ़ गये और उन्होंने दिल्ली व आगरा की तरफ फौज भेजकर अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया। तथा रेवाडी व नारनौल में अपने थाने बैठा दिये।[8] अजीत सिंह ने अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए अजमेर लेकर मुगल–राजपूत सम्बन्धों को ओर जटिल बना दिया।[9] जब बादशाह दक्षिण से 10 अप्रैल 1710 को टोडा की तरफ होकर लौटे तो सिक्ख समस्या को विकट स्थिति में देखकर राजस्थान के शासकों से समझौता करने को तैयार हो गये। इनको अपने वतन बहाल कर दिये। और उन्हें शाही इनायतों से सम्मानित किया गया।[10]

जो स्वामिभक्ति व वफादारी राजपूतों की अकबर के प्रति थी उसके बन्धन पूर्णरूपेण ढीले हो गये। इस संघर्ष से मुगल सत्ता की कमजोर होती स्थिति उजागर हो गई । राजपूतो में आत्माभिमान जागृत हुआ। यही से जयसिंह को राजस्थान की राजनीति की बागडोर और अपनी महत्त्वकांक्षा को साकार करने का अवसर मिला।[11] जयसिंह ने बूंदी उत्तराधिकार संघर्ष में हस्तक्षेप किया जिसके कारण राजस्थान में मराठो को प्रवेश करने का मौका मिल गया। जिसके परिणाम भयंकर हुए।

राजपूतो का आपसी संघर्ष और मराठो का राजस्थान मे प्रवेश

मुगल पराभव के दौर में शक्तिशाली केन्द्रीय नियंत्रण के अभाव में राजपूत नरेशों को आपसी सम्बन्धों की खुली छूट मिल गयी जिसके कारण उनमें आपस में तलवारें खिंच गई। मुगल उत्तराधिकार संघर्ष में बूंदी के राव राजा बुद्ध सिंह ने मुअज्जम का साथ दिया था जिसके कारण उसका शाही दरबार में मान बढ़ गया। आजम का पक्ष लेने के कारण कोटा के रामसिंह से बहादुर शाह नाराज था अतः उसने बुद्ध सिंह को कोटा पर अधिकार करने की छूट दे दी। जिससे कोटा बूंदी संघर्ष शुरू हुआ और कई लड़ाईयां हुई ।[12]

बुद्धसिंह दो बार सेना भेज कर भी कोटा पर अधिकार न कर सका। कोटा के भीमसिंह ने सम्राट फर्रूखसियर के समय सैयद भाइयों का पक्ष लेकर अपनी स्थिति को मजबूत किया। संवत् 1770 में भीमसिंह ने बूंदी पर अधिकार कर लिया। सवाई जयसिंह की बहन अमर कुंवरी का विवाह बुद्धसिंह से हुआ था। अतः उसने बूद्धसिंह का पक्ष लिया। जयसिंह ने बुद्धसिंह को मुगल दरबार में आमन्त्रित करवा कर उसको बूंदी का राज्य वापस दिलवाया।[13] इससे यहां एक ओर समस्या पैदा हुई कि जहां अब तक कोटा बूंदी का संघर्ष चल रहा था। अब साथ में कोटा जयपुर का संघर्ष शुरू हो गया। जिसका चरम परिणिति 1761 ई के युद्ध में हुई जिसमें झाला जालिम सिंह ने जयपुर के राजा सवाई माधो सिंह को पराजित किया।

बूंदी में सवाई जय सिंह ने हस्तक्षेप करते हुए 1730 ई. में बुद्ध सिंह को हराकर दलेल सिंह को शासक बनाया। इस पर बुद्ध सिंह की कछवाही रानी अमर कुंवरी ने प्रताप सिंह को भेजकर मराठों से सहायता मांगी । मराठा सरदार होल्कर 1734 ई. में बूंदी पहुंचा तथा बूंदी जीतकर अमर कुंवरी को दे दी। और बदले में अमर कुंवरी ने 6 लाख रूपये देने के साथ ही होल्कर हो राखी बांधकर अपना भाई बनाया।[14] यहीं से राजस्थान में मराठों का प्रवेश हुआ।

देबारी समझौते के अनुसार सवाई जय सिंह का उत्तराधिकारी उसकी उदयपुरी रानी से उत्पन्न पुत्र माधोसिंह होना था। जबकि उसका बड़ा पुत्र खींची रानी सूरज कँवर से उत्पन्न पुत्र ईश्वरी सिंह था। 1743 ई. में सवाई जयसिंह की मृत्यु के बाद ईश्वरी सिंह और माधों सिंह में उत्तराधिकार के लिए संघर्ष शुरू हुआ जिसके बीज देबारी समझौते में 1708 में ही पड़ गये थे। इस संघर्ष पर जयपुर में एक कहावत प्रचलित है – ''माधो माँगे आधो ईश्वर देवे न पाव, राम जी की मरजी हो तो पूरे पर ही दाँव'' अर्थात माधो सिंह आधा राज्य चाहता है लेकिन ईश्वरी सिंह चौथाई भी नहीं देना चाहता । वह तो पूरे पर ही अधिकार रखना चाहता है। मेवाड़ महाराणा जगत सिंह, बूंदी के उम्मेद सिंह, कोटा के महाराव दूर्जन साल भी माधो सिंह के गुट में शामिल हो गये। दोनों पक्षों की ओर से मराठों से सहायता प्राप्त करने के प्रयत्न आरम्भ हो गये। माधों सिंह की ओर से मल्हार राव होल्कर तथा ईश्वरी सिंह का पक्ष राणोजी सिंधिया ने लिया। राजमहल के युद्ध में 1 मार्च 1747 ई. में माधो सिंह पराजित हुआ।पेशवा ने दोनों में समझौता कराने का प्रयास किया लेकिन सफल नहीं हुआ। 1748 ई. में बगरू के युद्ध में ईश्वरी सिंह परास्त हुआ तथा उसने बूंदी उम्मेद सिंह को व चार परगने माधो सिंह को देना स्वीकार किया। बगरू के युद्ध के बाद ईश्वरी सिंह ने मराठों को जो रूपये देने का वायदा किया था। वह नहीं दे सका। इस पर होल्कर व गंगाधर तात्या ने जयपुर पर चढ़ाई कर दी। इससे ईश्वरी सिंह भयभीत हो गया और उसने 13

दिसम्बर 1750 ई. को आत्महत्या कर ली। राजस्थान में मराठा आतंक को इस दुघर्टना से समझ सकते है कि मराठो से राजस्थान कितना त्रस्त था और इन सब का जन्मदाता 1708 ई. का देबारी समझौता था। अब होल्कर ने 2 जनवरी 1751 ई. को माधो सिंह जयपुर की गद्दी पर बैठाया। होल्कर ने अपनी सहायता के बदले माधो सिंह से रूपया वसूल करने में कमी नही रखी।[15] जयपुर आये चार हजार मराठा सैनिकों पर राजपूतों ने आक्रमण कर दिया। जिनमें से 70 सैनिक ही प्राण बचा पाये। .यहां से राजस्थान की राजनीति में राजपूत–मराठा संघर्ष की एक नई उलझन प्रारम्भ हुई जो आगे चलकर इन दोनों जातियों के साथ–साथ राजस्थान के लिए भी घातक सिद्ध हुई।

इसी प्रकार अन्य राज्यों में भी मराठों का हस्तक्षेप बढ़ा । आपसी संघर्ष व अराजकता की स्थिति में तथा अमीर खां पिण्डारी की लूट व दबाव ने मेवाड़ राजकुमारी कृष्णा कुमारी की जीवन लीला को समाप्त कर दिया। यह राजपूताने के इतिहास पर एक कलंक है।

मराठों के आतंक व राजपूताने के आपसी संघर्ष व अराजकता की स्थिति से राजपूत शासक काफी परेशान हो गये। वे अब किसी अन्य शक्ति के सहारे अपनी समस्याओं का निजात चाहते थे। चूंकि मुगल सत्ता नाममात्र की थी। उसकी जगह को भरने वाले मराठें लूटेरे साबित हुए जो राजस्थान को लूटते रहें। मराठा आतंक हम ईश्वरी सिंह की आत्महत्या व कृष्णा कुमारी विवाद में स्पष्ट देख सकते हैं। इसके कारण आगे चलकर राजपूत शासकों ने अंग्रजों का दामन थामा। उनसे सहायक संधि की।ओर अपनी सुरक्षा का दायित्व ब्रिटिश कम्पनी पर छोड़कर चैन की साँस ली। ब्रिटिश संरक्षण स्वीकार करने के बाद ही राजस्थान में शांति और व्यवस्था स्थापित हो सकी। जब घरेलू व विदेशी लड़ाडियां समाप्त हो गई तब ''राजपूताने का सैनिक पौरूष असीम की शान्त निद्रा में डूब गया।''

संदर्भ सूची

1. ए. एल. श्रीवास्तव, मुगलकालीन भारत (1526 से 1803) पृ. 15–19
2. मआशिरे आलमगिरी पृ. 520
3. डां. गोपीनाथ शर्मा, राजस्थान का इतिहास पृ. 389
4. डां. गोपीनाथ शर्मा, आधुनिक राजस्थान का इतिहास पृ. 44–52
5. जोधपुर राज्य के ख्यात जिल्द, 2, पृ. 83, जगदीश सिंह गहलोत, कछवाहों का इतिहास पृ. 121
6. डां. गोपीनाथ शर्मा, राजस्थान का इतिहास पृ. 390, वंश भास्कर पृ. 3011–3018, लेटर मुगल्स जिल्द–1 पृ. 46–47
7. जे. सी ब्रुक्स कृत मेवाड़ का इतिहास अनुवाद एवं सम्पादक डां देवीलाल पालीवाल पृ. 29–30
8. डां. गोपीनाथ शर्मा, आधुनिक राजस्थान का इतिहास पृ. 53, वीर विनोद भाग–2, पृ. 836–837
9. डां. गोपीनाथ शर्मा, आधुनिक राजस्थान का इतिहास पृ. 53
10. डां. गोपीनाथ शर्मा, आधुनिक राजस्थान का इतिहास पृ. 54, टोड़ भाग–2, पृ. 80, इरविन लेटर मुगल्स भाग–1 पृष्ठ 73
11. डां. गोपीनाथ शर्मा, आधुनिक राजस्थान का इतिहास पृ. 54
12. एम. एल. शर्मा कोटा राज्य का इतिहास भाग– 1 पृ. 146
13. डां. गोपीनाथ शर्मा, आधुनिक राजस्थान का इतिहास पृ. 58
14. डां. निर्मला गुप्ता, राजस्थान अराजकता से व्यवस्था की ओर पृ. 14–15
15. डां. निर्मला गुप्ता, राजस्थान अराजकता से व्यवस्था की ओर पृ. 23